दिनांक 16 जनवरी 2018 को बी. एन. आर. चाणक्या राँची में आयोजित **Oil & Gas Conservation** (संरक्षण क्षमता महोत्सव) में माननीया राज्यपाल महोदया का अभिभाषणः—

तेल एवं प्राकृतिक गैस कम्पनियों के साथ पेट्रोलियम संरक्षण अनुसंधान संगठन द्वारा पूरे देश में 16 जनवरी से 15 फरवरी 2018 तक ''तेल एवं गैस संरक्षण अभियान'' का आयोजन किया जा रहा है। मुझे इस कार्यक्रम में आप सभी के मध्य सम्मिलित होकर प्रसन्नता हो रही है।

हाइड्रोकार्बन्स हमारे देश की आर्थिक वृद्धि की गति को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता आ रहा है। वर्त्तमान में, भारत विश्व में ऊर्जा का तीसरा सबसे बड़ा उपभोक्ता है। पेट्रोलियम उत्पादों की मांग बढ़ने की पूरी संभावना है क्योंकि तेल और प्राकृतिक गैस का योगदान देश में कुल ऊर्जा की आवश्यकता के एक तिहाई से अधिक है।

मनुष्य विकास के पथ पर बड़ी तेजी से अग्रसर है उसने समय के साथ स्वयं के लिए सुख के सभी साधन एकत्र कर लिए हैं। इतना होने के बाद और अधिक पा लेने की अभिलाषा में कोई कमी नहीं आई है। कल —कारखाने, मोटर—गाड़ियाँ, रेलगाड़ी, हवाई जहाज आदि सभी उसकी इसी अभिलाषा की देन हैं एवं उसके इस विस्तार से प्राकृतिक संसाधनों के समाप्त होने का खतरा दिन—प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है।

प्रकृति में संसाधन सीमित हैं। दूसरे शब्दों में, प्रकृति में उपलब्ध ऊर्जा भी सीमित है। इस बढ़ती जनसंख्या के साथ मनुष्य की आवश्यकताएँ भी बढ़ती ही जा रही हैं। दिन—प्रतिदिन सड़कों पर मोटर—गाड़ियों की संख्या में अतुलनीय वृद्धि हो रही है। रेलगाड़ी हो या हवाई जहाज सभी की संख्या धीरे—धीरे बढ़ती जा रही है। जिस गति से ऊर्जा की आवश्यकता बढ़ रही है उसे देखते हुए ऊर्जा के समस्त संसाधनों के नष्ट होने की आशंका बढ़ने लगी है। विशेषकर ऊर्जा के उन सभी साधनों की जिन्हे पुनः निर्मित नहीं किया जा सकता है जैसे पेट्रोल, डीजल, कोयला तथा भोजन पकाने की गैस। यही सच्चाई है कि जिस तेज गति से हम इन संसाधनों का उपयोग कर रहे हैं उसे देखते हुए वह दिन दूर नहीं जब धरती से ऊर्जा के संसाधन विलुप्त हो जाएँगे।

घरेलु तेल और गैस की सीमित उपलब्धता को देखते हुए भारत अपनी कच्चे तेल की आवश्यकता का लगभग 80 प्रतिशत आयात कर रहा है। इस भारी आयात निर्भरता और हमारे आर्थिक संसाधनों पर इसके दबाव को देखते हुए पेट्रोलियम उत्पादों का संरक्षण करने पर विशेष बल देने की आवश्यकता है। पेट्रोलियम उत्पादों का और अधिक महत्वपूर्ण रूप से संरक्षण अनिवार्य है। जिससे जलवायु परिवर्तन संबंधी चिन्ताओं का समाधान किया जा सके साथ ही हमारे पीढ़ियों के लिए स्वस्थ जीवन यापन करने का सुनहरा मौका भी मिल सके।

यह आवश्यक है कि हम ऊर्जा संरक्षण की ओर विशेष ध्यान दें एवं इसके प्रतिस्थापन हेतु अन्य संसाधनों को विकसित करें क्योंकि यदि समय रहते हम अपने प्रयासों में सफल नहीं होते तो संपूर्ण मानव सभ्यता ही खतरे में पड़ सकती है। हमारे देश में भी ऊर्जा की आवश्यकता दिन पर दिन विकास व जनसंख्या वृद्धि के साथ बढ़ती चली जा रही है। ऊर्जा की बढ़ती माँग आने वाले वर्षो में आज से तीन या चार गुणा अधिक होगी। इन परिस्थितियों में सरकार के साथ लोगों को भी जागरूक होने की आवश्यकता है। इस दिशा में अनेक रूपों में कई प्रयास किए गए है जिनमे कुल हद तक सफलता भी अर्जित हुई है। बायो–गैस तथा अधिक वृक्षारोपन इसी दिशा में उठाए गए कदम है। पृथ्वी पर ऐसे ऊर्जा संसाधनों की कमी नहीं है जो प्रदूषण रहित हैं।

विश्व भर में ऊर्जा संरक्षण व ऊर्जा के नवीन श्रोतों को विकसित करने के महत्व को समझा जा रहा है। सभी देश सौर– ऊर्जा को अधिक महत्व दे रहे हैं तथा इसे और अधिक उपयोगी बनाने व इसके विकास हेतु विश्व भर के वैज्ञानिकों द्वारा अनुसंधान जारी हैं।

हम सभी को खाना पकाने, परिवहन, कृषि और उद्योगों में पेट्रोलियम उत्पादों का प्रयोग करते समय सावधानी बरतनी चाहिऐ एवं कंजूसी करनी चाहिए और तेजी से समाप्त हो रहे पेट्रोलियम संसाधनों का संरक्षण करने की मुहिम में शामिल होना चाहिए। इससे हमें धन को बचाने और तेल उत्पादन तथा खपत से संबंधित प्रतिकूल सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरण संबंधी प्रभावों जिसमें वायुप्रदूषण, ग्लोबलवार्मिंग, जलप्रदूषण, कच्चे तेल के आयात पर निर्भरता शामिल है को समाप्त करने में भी मदद मिलेगी।

हमे आशाा है कि हमारे देश के वैज्ञानिक ऊर्जा के नए संसाधनों की खोज व इसके विकास में समय रहते सक्षम होंगे। इसके अतिरिक्त यह आवश्यक है कि सभी नागरिक ऊर्जा के महत्व को समझें और ऊर्जा संरक्षण के प्रति जागरूक बनें। यह निरंतर प्रयास करें कि ऊर्जा चाहे जिस रूप में हो उसे व्यर्थ न जाने दें।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है, कि इस वर्ष तेल ओर गैस कम्पनियों के साथ —साथ पेट्रोलियम संरक्षण अनुसंधान संगठन द्वारा पूरे देश में 16 जनवरी, 2018 से 15 फरवरी 2018 की अवधि के दौरान तेल और गैस संरक्षण अभियान आयोजित किया जा रहा है। जिसका विषय ''सक्षम—2018'' है। इस अवधि में पेट्रोलियम संरक्षण से संबंधित आवश्यकता, मुद्दे और उनके समाधान के बारे में जनता की जागरूकता बढ़ाई जाएगी। यदि लोग जागरूक होगें तो पेट्रोलियम उत्पादों के प्रभावी उपयोग के संबंध में सक्षम हो सकेंगे जिससे स्वास्थ्य और पर्यावरण संरक्षण की दिशा में हम सफल होगें।

मै प्रत्येक नागरिक से अपील करती हूँ, कि वे सरल और सुगम कार्यान्वयन योग्य ईंधन संरक्षण उपायों को अपने जीवन के एक अनिवार्य रूप में अपनायें और राष्ट्र की ऊर्जा संरक्षण के प्रति जागरूक बनें एवं अपना समर्थन दें।

जय हिंद　　जय झारखण्ड